कृषक ज्योति

कृषक ज्योति
Krishak Jyoti

भाग -1, अंक 2 जनवरी-2026

त्रैमासिक पत्रिका

संपादक - मंडल

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
मुख्य संपादक
ediotorinchief@krishakjyoti.in
प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग,
कुलभास्कर आश्रम PG कॉलेज
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सौम्या तिवारी
संपादक
editor@krishakjyoti.in
प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा उत्तर प्रदेश
राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@krishakjyoti.in
सहायक प्रोफेसर कीट विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@krishakjyoti.in
सहायक प्रोफेसर कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@krishakjyoti.in
टीचिंग एसोसिएट कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, त्रैमासिक पत्रिका, कृषि पत्रिका

पंजीकृत कार्यालय - 4/4सी, म्योर रोड, इलाहाबाद, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश -211002

Website - www.krishakjyoti.in

E-mail - editorinchief@krishakjyoti.in

Contact - 9450681433

e-ISSN No. 3108-1770

गेंदा की खेती
किसानों के लिए सुनहरा अवसर

विकास वैभव
कुलभाष्कर आश्रम पीजी कॉलेज प्रयागराज
प्रो .राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय नैनी प्रयागराज [3]

परिचय

भारत मे हिंदू धर्म का अत्यन्त पवित्र स्थान है जहाँ फूल शुभता, पवित्रता और सूर्य की ऊर्जा का प्रतीक है। देवी–देवताओं का स्वागत करने और समृद्धि का प्रतीक होने के साथ - साथ यह पारंपरिक , जीवंत सजावट के रूप में भी कार्य करता है और इसका आर्थिक मूल्य भी है। अपने चमकीले पीले, नारंगी तथा विभिन्न रंगों के कारण, गेंदे के फूलों को "सूर्य की जड़ी बूटी" कहा जाता है और ये व्यापक रूप से उपलब्ध, टिकाऊ ,सुगंधित तथा आर्थिक महत्व होता है जिससे भारत के सबसे लोकप्रिय फूलों में से विशेष स्थान सुरक्षित हो जाता है।

1. जलवायु:

- गेंदा ठंडी से मध्यम गर्म जलवायु में अच्छी तरह उगता है।
- आदर्श तापमान 20–30°C
- 5°C से कम तापमान हानिकारक।
- 6–8 घंटे धूप आवश्यक।
- अत्यधिक वर्षा से जलभराव न होने दें।

2. मिट्टी:

- उत्तम: अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी
- pH स्तर: 6.5–7.5
- रेतीली, काली एवं हल्की मिट्टी में भी उगाया जा सकता है।
- जलभराव वाली मिट्टी उपयुक्त नहीं।

3. उन्नत किस्मे

- पूसा नारंगी – बड़े, गहरे नारंगी फूल, 60–70 दिन में तैयार
- पूसा बसंती – पीले फूल, कम पानी में अच्छी पैदावार।
- अफ्रीकन गेंदा (Tagetes erecta) – बड़े फूल, व्यावसायिक उपयोग।
- फ्रेंच गेंदा (Tagetes patula) – छोटे फूल, सजावटी उपयोग।

4. नर्सरी प्रबंधन:

- बीज दर: 2–3 किलोग्राम प्रति एकड़
- बीज को 24 घंटे पानी में भिगोकर बोएँ
- नर्सरी मिट्टी: बालू + मिट्टी (1:1)
- अंकुरण: 7–10 दिन
- पौधे 20–25 दिन बाद रोपाई योग्य होता है

e-ISSN No. 3108-1770

5. बुवाई का समय एवं दूरी:

बुवाई समय:

- खरीफ: जून–जुलाई
- रबी: अक्टूबर–नवंबर
- जायद: वर्ष भर (ग्रीनहाउस में)

दूरी:

- कतार से कतार: 30–45 सेमी
- पौधे से पौधा: 20–30 सेमी

6. भूमि तैयारी:

- गहरी जुताई करें
- 5–10 टन गोबर खाद प्रति एकड़ मिलाएँ।
- 1 मीटर चौड़े एवं 15–20 सेमी ऊँचे बेड बनाएं।
- जल निकास की उचित व्यवस्था रखें।

7. रोपाइ:

- रोपाई सुबह या शाम करें।
- रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई।
- जड़ों को क्षति न पहुंचे।

8. खाद एवं उर्वरक:

- गोबर खाद: 5–10 टन/एकड़
- NPK अनुपात: 10:10:10
- जैविक विकल्प: वर्मी कम्पोस्ट, बोनमील
- 15–20 दिन के अंतराल पर खाद दें।

9. खरपतवार नियंत्रण:

- 20–25 दिन बाद पहली निराई
- आवश्यकता अनुसार 2–3 बार निराई
- मल्चिंग से खरपतवार कम होते हैं।

10 पिंचिंग

- 40–45 दिन बाद ऊपरी भाग तोड़ें
- इससे शाखाएँ बढ़ती हैं।
- उत्पादन 25–30% तक बढ़ता है।

11. मिट्टी चढ़ाना:

- पौधों के तने के पास मिट्टी चढ़ाएँ
- पौधा मजबूत होता है।
- जड़ों का विकास बेहतर होता है।

12. सिंचाई एवं जल निकास:

- सप्ताह में 2–3 बार सिंचाई
- गर्मी में आवश्यकता अनुसार
- ड्रिप सिंचाई सर्वोत्तम
- जलभराव से बचाव आवश्यक

13. फूलों की तुड़ाई:

- फूल पूर्ण खिलने पर सुबह तुड़ाई करें
- नियमित तुड़ाई से अधिक उत्पादन
- 3–4 माह तक फूल मिलते हैं।

14. उत्पादन:

- प्रति एकड़ उत्पादन: 8–12 टन
- प्रति पौधा: 80–150 ग्राम
- आय:- 50,000 से 1,00,000 रुपये प्रति एकड़

15. बीज उत्पादन:

- स्वस्थ पौधों का चयन करें।
- पूर्ण विकसित सूखे फूल से बीज निकालें।
- छाया में सुखाकर संग्रह करें।
- बीज शुद्ध एवं रोगमुक्त रखें।

16. कीट नियंत्रण:

- सामान्य कीट:
- एफिड्स
- थ्रिप्स
- सफेद मक्खी
- नियंत्रण:
- नीम तेल 5 मि.ली./लीटर पानी
- लेडीबग जैसे लाभकारी कीट

17. रोग नियंत्रण:

- सामान्य रोग:
- पाउडरी मिल्ड्यू
- रूट रॉट
- नियंत्रण:
- ट्राइकोडर्मा
- कॉपर ऑक्सीक्लोराइड
- उचित जल निकास

निष्कर्ष

- गेंदा की खेती कम लागत, कम जोखिम और साल भर मांग वाली फसल है।
- यदि वैज्ञानिक विधि से खेती की जाए तो यह किसानों के लिए अत्यंत लाभदायक व्यवसाय बन सकती है।

लाभ:

- कम लागत – अधिक मुनाफा
- प्रति एकड़ निवेश: लगभग ₹10,000 – ₹15,000
- औसत उत्पादन: 8–12 टन फूल
- सामान्य बिक्री आय: ₹50,000 – ₹1,00,000 प्रति एकड़
- शुद्ध लाभ: लगभग ₹40,000 – ₹85,000 तेज़ और लगातार आय
- 60–70 दिन में पहली तुड़ाई
- 3–4 माह तक लगातार फूल
- एक सीजन में 3–4 कटाई संभव
- त्योहारों (दीपावली, दशहरा, शादी सीजन) में दाम दोगुने
- कम जोखिम वाली फसल
- कीट व रोग कम
- सूखा सहनशील
- विभिन्न मिट्टियों में सफल
- रोजगार सृजन
- परिवार के 2–3 सदस्यों को काम
- माला बनाना, पैकिंग, बिक्री में अतिरिक्त आय

मूल्य संवर्धन से आय दोगुनी

1 माला एवं गुलदस्ता निर्माण

- लागत: ₹10–20 प्रति माला
- बिक्री मूल्य: ₹50–100
- मुनाफा: 2–3 गुना

2. सूखे फूल

- सजावट एवं गिफ्ट पैक के रूप में बिक्री
- मूल्य वृद्धि: 200–300% तक

3. प्राकृतिक रंग

- गेंदा की पंखुड़ियों से फूड कलर
- कीमत: ₹500–1000 प्रति किलो (प्रोसेसिंग के बाद)

4. औद्योगिक उपयोग

- इत्र, दवा, कॉस्मेटिक उद्योग में उपयोग
- कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग से स्थिर आय

5. ब्रांडिंग और पैकेजिंग

- "ऑर्गेनिक गेंदा" ब्रांड बनाकर बिक्री
- पैकिंग से 20–40% अधिक मूल्य

6. ऑनलाइन बिक्री

- त्योहारों में सीधी ग्राहक बिक्री
- मंडी पर निर्भरता कम
- अधिक लाभ